सल्तनतकालीन इतिहास लेखन पद्धति

डॉ0 राधागोविन्द सिंह*
डिम्पल कुमारी*

प्राचीन भारतीयों की इतिहास लेखन में कोई रूचि नहीं थी। उनके विद्वान धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक अध्ययनों पर अधिक ध्यान देते थे। भारतीय इतिहास–लेखन वस्तुतः एक इस्लामी विरासत है। मुसलमान उलेमा तथा इतिहासकारों ने ही इतिहास के प्रति जागरूता दिखाई एवं दिन प्रतिदिन की घटनाओं तथा राजनीतिक हलचलों का विस्तृत वर्णन लिखा। ऐसा करने में वस्तुतः उनका प्राथमिक उद्देश्य इस्लाम का गौरव कायम करना था। वे किसी अमरी उल मोमनीन के सैन्य कारामातों पर गर्व का अनुभव करते थे, जो काफिरों को इस्लाम में धर्मांतरित कर 'दारूल हरब' को 'दारूल इस्लाम' में परिवर्तित करने का प्रयास करता था। वे इसी दुनिया के व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी भौतिक सम्पत्तियों को महत्ता दी एवं अपने सांसारिक लाभों को बढ़ाने का कठोर प्रयत्न किया। उनकी इस सज वृत्ति ने ही उन्हें अपेन भूत तथा वर्तमान के घटनाक्रमों को लिपिबद्ध करने में सहायता दी।

मुस्लिम इतिहास–लेखकों, राजनामचा रखने वालों एवं दरबारी इतिहासकारों को नियुक्त करते थे जो उनेक क्रियाकलापों का विपुल हिसाब–किताब प्रायः अतिश्योक्तिपूर्ण होता था। इस्लामी जगत के वंशानुगत, क्षेत्रीय या सामान्य इतिहासों पर विद्वानों ने पुस्तकें लिखीं तथा कवियों ने मसनवी बनाये। लेखकों ने बड़े तथा छोटे लोगों की जीवन संबंधी बातों का वर्णन किाय एवं ऐतिहासिक उपाख्यानों तथा निजी अथवा सार्वजनिक घटनाक्रमों का विवरण दिया। उन्होंने केवल साहित्यिक प्रसिद्धि, पुरस्कार या अपने संरक्षकों के मानसिक उन्नति के लिए ही नहीं, अपितु अपनी बौद्धिक क्षुधा एवं अपने अवलोकनों एवं अनुभवों को लिखने की अपनी आन्तरिक ललक को संतुष्ट करने के लिए भी लिखा। शासनों तथा अमीरों में शिक्षित लोगों ने भी अपनी स्मृतियाँ निजी दैनिकी लिखी। इस⁄प्रकार, सल्तनत काल में इतिहास–लेखन अपने पूर्ण रूप में प्रकीर्णित हुआ। इस काल ने बड़ी संख्या में पेशेवर इतिहासकारों, इतिहास–लेखकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जो भावी पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक साहित्य का एक विपुल भंडार छोड़ गए।

***एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, महिला कॉलेज डालमियानगर, डेहरी ऑन–सोन वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)**
***शोध–छात्रा इतिहास विभाग,वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)**

मुस्लिम इतिहास–लेखकों के प्रारम्भिक साहित्यिक आलेख अरबी में मिलते हैं, जो कुरान तथा अरब उच्च वर्ग की भाषा थी। फारस में इस्लाम की स्थापना के साथ ही मुस्लिम जगत में फारसी राष्ट्रीयता पुनर्जीवित हुई। इसके परिणामस्वरूप तुर्की राजवंशों द्वारा, जो फारसी सम्राटों के दास अधिकारियों द्वारा स्थापित किए गये थे, फारसी भाषा एवं संस्कृति अना ली गई। फलतः, भारत में तुर्की शासन की स्थापना के साथ–साथ फारसी परम्परा के इतिहास–लेखन की भी जडत्रें जम गयीं। अतः इनमें से अधिकांश साहित्यिक आलेख फारसी में पाये जाते हैं। यद्यपि कुछ कृतियाँ अरबी तथा अन्य भाषाओं जैसे तुर्की में भी हमें मिली हैं। इन दिनों हम अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में कई महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद पाते हैं। इसके साथ ही, विद्वानों द्वारा अन्य कृतियों का भी अनुवाद एवं सम्पादन किया जा रहा है।

प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत के अधिकांश इतिहास–लेखक विदेशी वंशावली के तुर्क या अफगान थे जिनकी प्राथमिक रूचि अपने सैन्य नेताओं के सैनिक एवं राजनीतिक कारनामों तथा दिल्ली के सुल्तान या अन्य क्षेत्रीय राज्यों के दरबारों के घटनाक्रमों का वर्णन किया जिनका सामान्य जनता से कोई संबंध नहीं था। देश की सामाजिक–आर्थिक अवस्थाओं पर उन्होंने शायद ही कभी ध्यान दिया। शिक्षा की मध्यकालीन प्रणाली 'धर्मशास्त्र उन्मुख' होने के कारण अधिकतर लेखक ज्ञान की प्रत्येक शाखा की उत्पत्ति कुरान तथा पैगंगर मुहम्मद से मानते थे। अतः उनकी सामग्री को उपयोग में लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन व्यक्तियों की मनःस्थिति को स्पष्ट रूप से समझा जाए, जिन्होंने इसे लिखा। वे वैज्ञानिक इतिहासकार ही थे, अतः उनकी कृतियों को सावधानी एवं ध्यान के साथ देखा जाना चाहिए। उनके ब्योरों को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में मानने से पूर्व उन्हें आधुनिक अनुसंधान की विधियों द्वारा परखा तथा प्रमाणि किया जाना चाहिए। निस्संदेह सैन्य एवं राजनीतिक इतिहास इन्हीं साहित्यिक स्त्रोतों में सुरक्षित हैं। सिक्कों के प्रमाण, स्मारक तथा कला के प्रतितिनिधि प्रतिरूपों का अध्ययन भी उस काल के इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक हैं यद्यपि ऐसे स्रोत सामान्तया द्वितीयक महत्ता के हैं जो साहित्यिक प्रमाणों को सत्यापित या पुष्ट करते हैं।

समकालीन लेखक एवं उनके कार्यः–समकालीन लेखकों एवं कृतियों का परिचायात्मक ब्योरा दिया जा सकता है, जो प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण में हमारी सहायता करती हैं।

चाचनामाः–चाचनामा' अभी तक खोज किया गया सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है, जो 711–12 में अरब आक्रमण के समय सिन्ध के देशी शासक वंश के इतिहास पर प्रकाश डालता है। यह पुस्तक एक गुमनाम लेखक के द्वारा अरबी में लिखी गई,

जो संभवतः मुहम्मद बिन कासिम के खेमे का एक अनुयायी होगा तथा इसका नाम 'चचानामा' शांसक गृह के संस्थापक के नाम पर पड़ा होगा। यह सिन्ध के शूद्र वंश का एक एक संक्षिप्त ब्योरा देता है, जिसके अंतिम शासक राय सहासी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् राजगद्दी को उसके एक ब्राह्मण मंत्री चाच, जो सिलैज का पुत्र था, ने सातवीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में हथिया लिया। चाच ने राजत्व के लिए अपने दावे को मजबूत करने के लिए अपने संरक्षक की विधवा रानी 'सुब्बन देव' (देवी) से विवाह कर लिया। उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दाहिर 708 ई0 में गद्दी पर बैठा। उसी के काल में सिन्ध पर अरबों का आक्रमण हुआ तथा इस संघर्ष में वह अपने सम्पूर्ण परिवारजनों सहित मर मिटा।

चन्दामामा का फारसी में अनुवाद अली बिन अबु वक्र कुफी के द्वारा नसीरूद्दीन कुबाचा के काल में किया गया, जो मुहम्मद गोरी का एक तुर्की दास अधिकारी था, जिसे उसे मालिक द्वारा मुल्तान तथा उच्च (सिन्ध) का गर्वनर नियुक्त किया गया था।

अलबेरूनी—अलबेरूनी (972—1048 ई0), प्रथम महत्त्वपूर्ण मुस्लिम भारतविद (इण्डोलाजिस्ट), ग्यारहवीं शताब्दी के महानतम बुद्धिजीवियों में से एक थे। उनका जनम खीवा राज्य, जो उस समय ख्वारिज्म कहलाता था, के इरानी परिवार में हुआ। वे 'सर्वज्ञानसंपन्न' व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने समय के 'विज्ञान एवं साहित्य' के विविध विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। वे धर्मशास्त्री, दार्शनिक, तर्कज्ञाता, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, ज्योतिषी, भूगोलशास्त्री एवं चिकित्सक सभी थे। यद्यपि उनका पालन—पोषण कठिनाई में हुआ, तथापि अलबेरूनी ने भौतिक सुविधाओं एवं जीवन` ऐशो—आराम के प्रति कभी कमजोरी प्रदर्शित नहीं की। वे मामुनी वंश के ख्वारिज्म शाह के राजनैतिक सलाहकार थे। 1017 ई0 में जब महमूद गजनी ने उनके अपने देश पर आक्रमण कर उसे जीत लिया, अलबेरूनी भी विजितों में से एक थे। वे तब तक 'मनुज्जिम'—ज्योतिषी एवं खगोलशास्त्री के रूप में प्रसिद्धि पा चुके थे। ये यूनानी तथा भारतीय प्रणालियों के अच्छे ज्ञाता मसूद के शासन के सन्दर्भ में एक एक मौलिक तथा ताजा इतिहास देते हैं। वे सुल्तान के दरबार की लिखित तस्वीर एवं उसके अमीरों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत करते हैं। गोर में मसूद के अभियान का वर्णन शानबानियों (गोर तथा मुहम्मद गोरी का राजघराना) के उत्कर्ष से पूर्व उस क्षेत्र की सामाजिक—राजनीतिक स्थिति के बारे में ज्ञान का दुर्लभ स्रोत है। यह पुस्तक, जो यद्यपि विस्तृत है, जल्दीबाजी में अस्पष्ट तथा बोलचाल की फारसी भाषा में लिखी प्रतीत होती है, जिसमें कई टूटे वाक्य, व्यावकरणीय अशुद्धियाँ तथा अस्पष्ट शब्द है। विषय सामग्री भी सुव्यवस्थित नहीं है और न ही लेखक ने घटनाओं का कालानुक्रमिक वर्णन किया है।

हसन निजामी:—हसन निजी की पुस्तक 'ताजुल मासीर' यानी 'कारनामों का ताज' मुख्यतया कुतबुद्दीन ऐबक के इतिहास का वर्णन करती हैं। नियाजी खुरासान के एक अप्रावासी थे। उनका जन्म निशापुर में एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में हुआ था। वे लिखते हैं कि मैंनें 'कभी भी विदेश यात्रा का स्वप्न नहीं देखा था', जब तक कि अपने देश की परेशानियों ने 'उन्हें कहीं बाहर जाकर एक आवास देखने को बाध्य नहीं किया'। वे गजानी आए, सुल्तान मुहम्मद गोरी के दरबारियों से जान—पहचान की तथा शीघ्र ही दिल्ली चले गए। वे कुतुबुद्दीन ऐबक के अधीन सेवारत हो गए, जो उत्तरी भारत में मुहम्मद गोरी का वायसराय था। 1205 ई0 में ऐबक के आदेश पर हसन नियाजी ने इस पुस्तक को लिखना प्रारम्भ किया। मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात्, ऐबक उत्तरी भारत का स्वतन्त्र शासक हो गया। इससे लेखन की सामाजिक प्रतिष्ठा में स्वाभाविक बढ़ोत्तरी हुई तथा उसके आधिकाधिक कार्य का मूल्य भी बढ़ा। पुस्तका का प्रारम्भ 1191—92 में एक जख्मी शेर के रूप में मुहम्म गौरी के भारत आक्रमण से हेाता है, जबवह पृथ्वीराज तृतीय, जो दिल्ली तथा अजमेर का चौहान शासक था, के हाथों पूर्व पराजय का बदला लेने के लिए तराईन का द्वितीय युद्ध लड़ता है। लेखक ऐब के 1192 से 1206 ई0 तक के सैन्य कारनामों का विस्तृत वर्णन करता है, यद्यपि स्वतंत्र शासक (1206—10 ई0) के रूप में उसकी उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन एक पृथक अध्याय में है। लेखक आराम शाह का जिक्र नहीं करता है, किन्तु इल्तुतमिशन के शासन के 1217 ई0 तक की घटनाओं का वर्णन करता है।

मिन्हाज उस सिराज:—मिन्हाज उस सिराज मध्य एशिया के एक कुलीन परिवार से संबंधित थे। ''वे अपनी माता की तरफ से गजनी के सुल्तान महमूद के राजघराने से सम्बद्ध थे।'' उनके पिता मुहम्मद गौरी के अधीन काजी या आध्यात्मिक गुरू के रूप में 'हिन्दुस्तानी सेना' से संबद्ध थे। मिन्हाज स्वयं भी इस्लामी धर्मशास्त्र (मंकूल) तथा विधि—शास्त्र (फिख) के एक प्रतिष्ठित विद्वान थे। 1227 ई0 में नसीरूद्दीन कुबाचा, जो उस सयम दिल्ली के विरूद्ध विद्रोह कर चुका था, द्वारा उन्हें उच्च में फिरोजी मदरसा का प्राचार्य नियुक्त किया गया। अगले ही वर्ष उच्च को शाही सेना ने पुनः प्राप्त कर लिया, जिसका नेतृत्व सुल्तान इल्तुतमिश ने किया। मिन्हाज उस सिराज उसके साथ दिल्ली आए, जहाँ उन्हें सुल्तान द्वारा संरक्षण मिला। चार—पाँच दीवान (पद्य रचनाओं का संकलन), करीब एक दर्जन उपन्यास, निजामुद्दीन के सॅफी दर्शन एवं उपदेशों के चार संग्रह के अतिरिक्त, पद्य तथा गद्य में, धर्मशास्त्र, दर्शन, कला, साहित्यिक आलोचना तथा कई सांस्कृतिक भावों पर कई टिप्पणियाँ। वे प्रथम मुस्लिम कवि थे, जिन्होंने हिन्दी शब्दों में भरपूर उपयोग किया तथा भारतीय वाद्यों के प्रतीकों एवं भावों को अपनाया।

अमीर खुसरों की किसन उस सादाईन एक ऐतिहासिक मसनवी है, जो सुल्तान कैकूबा तथा उसके पिता, बंगाल के गवर्नर बुधरा खान के बीच अवध में हुई बैठक का आँखों देखा वृतान्त देती है जहाँ कवि युवा सुल्तान के साथ गया था। यह उस काल की राजनीतिक स्थिति, दरबार के माहौल एवं सामाजिक–आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालती है।

मिफ्ताहुल फुतुह कविता में जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य–अभियानों का वर्णन है।

खजाइनुल फुतुह या तारीख ए इलाही गद्य में एक ऐतिहासिक रचना है, जो अलाउद्दीन खिलजी की विजयों तथा उपलब्धियों का वर्णन करती है। उसके दक्कन के सैन्य अभियानों का विस्तृत विवरण दिया गया है। भारत में मंगोल आक्रमणों तथा उनसे निबटने के लिए अलाउद्दीन द्वारा उठाई गई कठोर नीतियों का वर्णन प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित होने के कारण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुमूल्य है।

मसनवी, जिसका शीर्षक आशिका या देवल रीन खिज यानी है, अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र खिज्र खान तथा गुजरात के राणा करण की पुत्री देवल रीन की प्रेम कथा का वर्णन है। इसमें अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों का भी संक्षिप्त वर्णन है।

नूह सिफिर की काव्यात्मक रचना अलाउद्दीन खिलजी क अयोग्य तथा अक्षम उत्तराधिकारी मुबारक शाह खिलजी के शासन का वर्णन करती है।

तुगलकनामा भी एक ऐतिहासिक मसनवी है। यह अमीर खुसरों के द्वारा गियासुद्दीन तुगलक के खुसरो खान (1320 ई0) पर विजय की याद में रची गई, जिस विजय द्वारा एक नये शासन वंश की स्थापना हुई थी। यह गियासुद्दीन तुगलक के शासन के इतिहास का एक बहुमूल्य प्राथमिक स्रोत है।

अमीर खुसरो द्वारा ये सभी पुस्तकें या तो शासकों के निर्देश पर लिखी गईं या उनको उपहार देने के लिए। स्पष्टतः वे चित्र का केवल उज्जवल पक्ष प्रदर्शित करते हैं। लखेक अपने संरक्षकों की उपलब्धियों की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करता है तथा उनकी कमजोरियों एवं असफलताओं पर पर्दा डाल देता है। इन कार्यों में तथ्यात्मक तथा स्थान वर्णन अशुद्धियाँ हैं तथा कालानुक्रमिकता का अभाव है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त अमीर खुसरों का एक संग्रह, इजाज ए खुसरवी उनके द्वारा अपने मित्रों या मालिकों को लिखे विभिन्न प्रकार के कागजातों, निजी पत्रों या टिप्पणियों, या अपने साहित्यिक तथा बौद्धिक क्षुधा को मिटाने के लिए लेखनों का व्यापक संग्रह है। इनमें से कुछ अधिकारिक कागजात है, जैसे लखनौती का फतानामा, जिसकी रचना उन्होंने सुल्तानों के कहने पर की, जिसका अत्यन्त ऐतिहासिक महत्त्व हैं। सामान्य रूप में इजाज ए खुसरवी की विषय–वस्तु

उस काल के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास का एक बहुमूल्य स्रोत है। वस्तुतः अमीर खुसरों की रचनाएँ चार दशकों तक हिन्दुस्तान के जीवन एवं लोगों की अवस्थाओं के बारे में ज्ञान एवं सूचना का एक खजाना है, जब दिल्ली सल्तनत अपने गौरव के चरमोत्कर्ष पर थी।

जियाउद्दीन बर्नी:–जियाउद्दीन बर्नी (ज. 1285 ई.), तारीख ए फिरोज शाही का प्रसिद्ध लेखक, को प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत के सभी समकालीन इतिहासकारों में महानतम माना गया है। भारत आए प्रारम्भिक तुर्की प्रव्रजितों के एक कुलीन परिवार से वे संबंधित थे। उके नाना बलबन के एक प्रतिष्ठित अमीर थे। उनके पिता मुवैदुल मुल्क जलालुद्दीन खिलजी के द्वितीय पुत्र शहजादा अरकली खान के निजी कर्मचारी थे। बर्नी के चाचा अलाउल मुल्क अलाउद्दीन अरकली खान निजी कर्मचारी थे। बर्नी के चाचा अलाउल मुल्क अलाउद्दीन खिलजी के एक मित्र थे। देवगिरी अभियान तथा जलालुद्दीन की हत्या के षड्यंत्र में वे अलाउद्दीन का दायां हाथ थे। अलाउद्दीन के गद्दी पर बैठते ही, अलाउल मुल्क को तुरन्त ईनाम मिला तथा उसे कारा तथा अवध का गवर्नर बना दिया गया। जल्द ही उसे सुल्तान का मुख्य सलाहाकर तथा राजधानी का कोतवाल बनने के लिए दिल्ली आमंत्रित किया गया। बर्नी का पालन–पोषण राजधानी के एक ऊँचे माहौल में, उस समय की ऊँची कुली परम्परा के अनुरूप हुआ। उन्होंने मुहम्मद बन तुगलक के शाही दरबार में प्रवेश किया। सत्रह वर्षों तक उसका संरक्षण प्राप्त किया। सुल्तान उन्हें एक उच्च कोटि के बुद्धिजीवी की प्रतिष्ठा प्रदान करत था।

बर्नी अमरी खुसरों के एक करीबी सहयोगी थे तथा सल्तनत के शीर्षस्थ अमीरों के समकक्ष थे। वे अपने उच्च सामाजिक स्तर के प्रति बहुत सचेत रहते थे। अपने दुर्भाग्य से दरबार की राजनीति में अचानक आए बदलाव में वे बलि का बकरा बन गए। मुहम्मद बिन तुगलक की निःसंतान थट्टा (सिन्ध) में मृत्यु हो गई, जहाँ वह एक विद्रोह को दबाने गया था। जब उसकी मृत्यु का समाचार राजधानी पहुँचा, तो ख्वाजा जहाँ, जो सुल्तान की अनुपस्थिति में केंद्रीय सरकार चलाता था, ने गद्दी पर एक बच्चे को बिठा दिया। उसे यह जानकारी नहीं थी कि फिरोज तुगलक (मुहम्मद बिन तुगलक का एक चचेरा भाई) को शाही लोगों तथा सेना अधिकारियों द्वारा पहले ही सुल्तान घोषित किया जा चुका है।

फिरोज तुगलक की आत्मकथा:–सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने बत्तीस पृष्ठों की एक छोटी पुस्तक अपने आत्मकथात्मक लेखन के रूप में छोड़ी है, जो 'फुतुहत ए फिरोज शाही' जिनमें से कुछ ने इच्छानुरूप परिणाम नहीं दिये। सुल्तान सच्चाई को छिपाने का प्रयत्न नहीं करता है या अपनी असफलताओं के लिए कोई चालाकीपूर्ण स्पष्टीकरण नहीं देखा है, बल्कि राजकीय मामलों से निपटने में अपने

मस्तिष्क की वास्तविक कार्यप्रणाली दर्शाता है। यह पुस्तक फिरोज के 'दयालु और उदर भाव को सुहाने ढ़ंग से प्रस्तुत करती हैं', यह उसके राजोचित कर्त्तव्यों की संकल्पना, जो धार्मिक, मानवतावादी एवं नैतिक दायित्वों पर आधारित थी, को स्पष्ट करती है।

शम्स ए सिराज अफीफः—शम्स ए सिराज अफीफ (ज. 1954 ई.) अबोहर (पंजाब) के रहने वाले थे, जो सुल्तान फिरोज तुगलक की भट्टी माता का मूल नगर था। एक निजी मित्र थे। अतः अफीफ तुगलक के गद्दी संभालने से पूर्व से ही उसके एक निजी मित्र थे। अतः अफीफ के पूर्वजों की तुगलक शासकों से अंतरंगता रही थी, उन्होंने स्वयं एक विद्वान के रूप में फिरोज तुगलक के दरबार की शोभा बढ़ाई यद्यपि उन्होंने कभी भी औपचारिक रोजगार स्वीकार नहीं किया। वे सुल्तान के साथ विद्वतापूर्ण वार्तालाप करते थे तथा उसके साथ शिकार अभियानों पर भी जाया करते थे। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने तीन तुगलक शासकों—गियासुद्दीन मुहम्मद बिन तुगलक तथा फिरोज तुगलक—के जीवन वृत्त, सैन्य अभियानों तथा प्रशासकीय उपलब्धियों के ऊपर तीन पुस्तकें लिखीं, जिनमें से अब केवल एक तारीख ए फिरोजशाही ही बच पाई है। यह अनन्य रूप से फिरोज तुगलक के शासनकाल को समर्पित है तथा उसके समय का सबसे सही तथा प्रामाणिक समकालीन ब्योरा प्रस्तुत करती है। उनहोंने सही अर्थों में एक इतिहासकार एवं जीवनी—लेखक के रूप में काम किया स्वार्थ, पूर्वाग्रह या प्रतिक्रिया के गौरवशाली अतीत के संस्मरणों को भावी पीढ़ियों की नैतिक उन्नति तथा लाभ के लिए लिखा। सुसंहत एवं अच्छी तरह लिखे, पुस्तक के नब्बे क्रियाकलापों का सरल तथा वास्तविक वर्णन किया है, बल्कि उसकी प्रशासकीय नीतियों को उसके जन कल्याण के क्रियाकलापों के विशेष संदर्भ में भी लिखा है। इस पुस्तक के अध्ययन से हमें यह लगता है कि जन कल्याण के लिए राज्य के संसाधनों के उपयोग के मामले में फिरोज शाह तुगलक वस्तुतः शेरशाह सूरी तथा अकबर का वास्तविक अग्रगामी था। यह पुस्तक इस अर्थ में भी बेजोड़ है कि इसने लोगों के जीवन तथा दशा का भी वर्णन किया है, जिस पक्ष को सामान्यतया अन्य समकालीन लेखकों द्वारा अनदेखा कर दिया गया था। इलियट के अनुसार, 'आइने अकबरी' को छोड़कर, केवल इसी पुस्तक से मुसलमान शासकों के अधीन भारत की आन्तरिक अवस्था का हमें पता चलता है, किसी अन्य पुस्तक से नहीं।

अमीर तैमूर की आत्मकथाः—अमीर तैमूर (1334—1405 ई0)—'पृथ्वी पर ईश्वर का कोड़ा', जिसने दिल्ली में 1398—99 में एक तूफान खड़ा कर दिया था—ने अपनी विजय के उपरांत 'तुजुक ए तैमुरी' या 'मलफूजत ए तैमूरी' में एक आत्मकथात्मक ब्योरा भी छोड़ा। ऐसा कहा जाता है कि यह मूलतः घघतई (तुर्की) में लिखा गया

था, जिसका शेरशाह के शासनकाल में अबु तालीब हुसैनी द्वारा फारसी में अनुवाद किया गया। आधुनिक इतिहासकारों में इस पुस्तक की सच्चाई को लेकर एक लम्बे समय तक काफी विवाद चला, जो अब समाप्त हो चुका है तथा उस पुस्तक को वास्तविक माना गया है। यह पुस्तक स्वयं तैमूर द्वारा नहीं लिखी गई बल्कि उसने इसे अपने निर्देश एवं देख—रेख में लिखवाया। इसकी भाषा सरल है तथा यह सीधे—सादे रूप में तथ्यात्मक जानकारी देती है। तैमूर के विध्वंसात्मक कार्यकलापों की कड़वी सच्चाई उस 'रक्त विपासु दैत्य' के वास्तविक उद्देश्य को बगैर छिपाये दी गई है। इन सभी की व्याख्या प्रथम वचन में हुई है।

संदर्भ—सूचीः—

1. मुहीबुल हसन एवं मुहम्मद मुजीब (संपादित), 'हिस्टोरियंस ऑव मेडिएवल इंडिया', मीनाक्षी, 1968, पृ.— प्प
2. चाच 'जज्जा' शब्द, जो संस्कृत शब्द 'यायाति' का प्राकृत रूप है, का स्थानीय रूप लगता है। भारतीय इतिहास में 'जज्जा' नाम वाले कुछ लोग मिले हैं। कश्मीर के राजा जयदीप का एक भाई भी जज्जा था जिसने विद्रोह किया और जयपीद के हाथों मारा गया।
3. शायद सहजिगा अथवा सिन्हासेना के कलिए अभिप्रेत—तदैव।
4. शिलादित्य के लिए सिलाजी—तदैव।
5. यू.एम. दाउदपोता द्वारा फारसी से अंग्रेजी में अनूदित और संपादित हैं, हैदराबाद (दक्कन), 1939.
6. मध्य एशिया में तुर्कीस्तान का एक 'खनाते', अब पूर्व सोवियत संघ का एक भाग।
7. पूर्ण शीर्षक : 'तहकीक (अथवा तहरीर) माली ली हिन्द मीन महाकालफील अक्ल आओ मर धुला'।
8. जदुनाथ सरकार मुहीब्बुल हसन लिखित 'हिस्टोरियंस ऑव मेडिएवल इंडिया' में, तत्रैव, पृ.—167.
9. ई. एण्ड डी, प्प्ए पृ. 25, 29, 36.
10. खंड 7, 8 और 9 एवं खंड 6 और 10 के कुछ भाग मेजर डब्ल्यू. एन. लीस और उनके भारतीय सहकर्मियों के पर्यवेक्षण में संपादित एवं 'बिबलियोथिका इंडिका' में पुनर्प्रस्तुत किए गए थे, निचोड़ के लिए देखें ई एण्ड डी, प्प्ए पृ. 53—153.